# Dr. Vini Sharma

# राम मनोहर लोहिया के लोकतंत्र पर विचार.

लोहिया जानते थे कि विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में अंग्रेजी का प्रयोग आम जनता की प्रजातंत्र में शत प्रतिशत भागीदारी के रास्ते का रोड़ा है। उन्होंने इसे सामंती भाषा बताते हुए इसके प्रयोग के खतरों से बारंबार आगाह किया और बताया कि यह मजदूरों, किसानों और शारीरिक श्रम से जुड़े आम लोगों की भाषा नहीं है।

डॉ॰ राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 को उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जनपद में हुआ था.

गांधी जी की पुकार पर 10 वर्ष की आयु में स्कूल त्याग दिया. 1925 में मैट्रिक की परीक्षा दी।
साइमन कमिशन के बहिष्कार के लिए छात्रों के साथ आंदोलन किया। कलकत्ता में युवकों के सम्मेलन में जवाहरलाल नेहरू अध्यक्ष तथा सुभाषचंद्र बोस और लोहिया विषय निर्वाचन समिति के सदस्य चुने गए

वे सात क्रान्तियां थी ये थीं-

(१) नर-नारी की समानता के लिए क्रान्ति,

(२) चमड़ी के रंग पर रची राजकीय, आर्थिक और दिमागी असमानता के खिलाफ क्रान्ति,

(३) संस्कारगत, जन्मजात जातिप्रथा के खिलाफ और पिछड़ों को विशेष अवसर के लिए क्रान्ति,

(४) परदेसी गुलामी के खिलाफ और स्वतन्त्रता तथा विश्व लोक-राज के लिए क्रान्ति,

(५) निजी पूँजी की विषमताओं के खिलाफ और आर्थिक समानता के लिए तथा योजना द्वारा पैदावार बढ़ाने के लिए क्रान्ति,

(६) निजी जीवन में अन्यायी हस्तक्षेप के खिलाफ और लोकतंत्री पद्धति के लिए क्रान्ति,

(७) अस्त्र-शस्त्र के खिलाफ और सत्याग्रह के लिये क्रान्ति।

# लोहिया पर राजनीतिक विचार.

वे वास्तव में मानव स्वतंत्रता समानता अन्याय के विरुद्ध खड़े होने वाले महान समाजवादी नेता थे उन्होंने भारत की युवा पीढ़ी को समाजवाद का नया चिंतनशील स्वरूप समर्थित किया उन्होंने राजनीतिक विचारों का आधार बताय.

लोहिया अपने जीवन पर सबसे ज्यादा गांधी तथा

1. समाजवाद लोहिया के विचारों में डॉक्टर लोहिया मार्क्स और गांधी दोनों को मानते थे वह गांधीवाद और मार्क्सवाद के सिद्धांतों को मिलाकर भारतीय परिस्थितियों के अनुसार कुछ चीजों में संशोधन चाहते थे उनका मानना था लोकतंत्र में समाजवाद में रूप से होना चाहिए.

राष्ट्रीय सचिव, समाजवादी समागम डॉ राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि समाजवाद की दो शब्दों में परिभाषा देनी हो तो वे हैं- समता और संपन्नता. इन दो शब्दों में समाजवाद का पूरा मतलब निहित है.

समता और संपन्नता जुड़वा हैं. उन्होंने समता हासिल करने के लिए 11 सूत्रीय कार्यक्रम देते हुए लिखा कि

इनमें से हर मुद्दे में बारूद भरा हुआ है. वे सूत्र हैं-
सभी

प्राथमिक शिक्षा, समान स्तर और ढंग की हो तथा स्कूल खर्च और अध्यापकों की तनख्वाह एक जैसी हो.

प्राथमिक शिक्षा के सभी विशेष स्कूल बंद किये जायें.

अलाभकर जोतों से लगान अथवा मालगुजारी खत्म हो. संभव है कि इसका नतीजा हो सभी जमीन का अथवा लगान का खात्मा और खेतिहर आयकर की शुरुआत.

पांच या सात वर्ष की ऐसी योजना बने, जिसमें सभी खेतों को सिंचाई का पानी मिले. चाहे वह पानी मुफ्त अथवा किसी ऐसी दर पर या कर्ज पर कि जिससे हर किसान अपने खेत के लिए पानी ले सके.

अंग्रेजी भाषा का माध्यम सार्वजनिक जीवन के हर अंग से हटे.

अगले 20 वर्षों के लिए रेलगाड़ियों में मुसाफिरी के लिए एक ही दर्जा हो. अगले 20 वर्षों के लिए मोटर कारखानों की कुल क्षमता बस, मशीन, हल और टैक्सी बनाने के लिए इस्तेमाल हो.

एक ही फसल के अनाज के दाम का उतार-चढ़ाव 20 प्रतिशत के अंदर हो.

और जरूरी इस्तेमाल की उद्योगी चीजों के बिक्री के दाम लागत खर्च के डेढ़ गुना से ज्यादा न हों.

पिछड़े समूहों यानी आदिवासी, हरिजन, औरतें हिंदू तथा अहिंदुओं की पिछड़ी जातियों को 60

पिछड़े समूहों यानी आदिवासी, हरिजन, औरतें हिंदू तथा अहिंदुओं की पिछड़ी जातियों को 60 प्रतिशत को विशेष अवसर मिले.

और दो मकानों से ज्यादा मकानी मिल्कियत का राष्ट्रीयकरण, जमीन का असरदार बंटवारा और उसके दामों पर नियंत्रण.

डॉ लोहिया ने विश्व नागरिक और विश्व सरकार का सपना देखा. वे कहते थे कि धर्म दीर्घकालीन राजनीति है और राजनीति अल्पकालीन धर्म. धर्म श्रेयस की उपलब्धि का प्रयत्न करता है और राजनीति बुराई से लड़ती है. यह कथन धर्म और राजनीति को परस्पर पूरक बना देने के साथ-साथ धर्म को रूढ़ियों और अंधविश्वास से मुक्त करने की प्रेरणा देता है और राजनीति को अधिकार, मद और स्वार्थपरता से दूर रहने की दृष्टि देता है.

2. लोहिया प्रजातंत्र के समर्थक थे लोहिया समाजवाद की सफलता के लिए उन्होंने मानना था कि लोकतंत्र के बगैर समाजवाद की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि लोकतंत्र एक ऐसा तत्व है जो व्यक्ति की स्वतंत्रता का पूर्ण समर्थन करता है वह व्यक्ति की स्वतंत्रता में राज्य के हस्तक्षेप को ठीक नहीं मानते थे भाषा और संगठन करने की स्वतंत्रता पर किसी प्रकार का प्रतिबंध सहन नहीं करते थे.

3. लोहिया विश्व संसद के पक्ष में थे लोहिया विश्व संसद बनाने के पक्ष में थे वह चाहते थे व्यस्क मताधिकार हो लेकिन विश्व संसद का अर्थ किसी राष्ट्र की स्वतंत्रता का प्रण करना नहीं मानते थे राष्ट्रीय स्वतंत्रता भी बनी रहे और विश्व संसद का गठन भी हो जाए ऐसा संभवत इसलिए विश्व संसद की कल्पना साकार ना हो सकी

समाजवादियों की तरह लोहिया शक्ति के केंद्र का समर्थन नहीं करते थे वे चाहते थे जो बड़े-बड़े उद्योग हैं उनकी शक्तियों का केंद्रीयकरण की समस्या को उत्पन्न करने वाला मानते हैं इसीलिए लोहिया का मानना था कि उद्योगपतियों पर सरकार का थोड़ा-बहुत नियंत्रण होना चाहिए अतः लोहिया व्यक्ति की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से छोटे उद्योगों का समर्थन करते थे तथा चाहते थे कि जो शक्ति हो वह कहीं ना कहीं टुकड़ों में तथा छोटे-छोटे रूपों में लोगों में विभाजित हो ताकि हर एक व्यक्ति को आगे बढ़ने तथा अपने जीवन में विकास करने का अवसर प्राप्त हो.

कि विश्व में वर्ग संघर्ष है जिसके अंतर्गत उच्च वर्ग निम्न वर्ग का हमेशा शोषण करता रहता है परंतु लोहिया ने इन विचारों को नहीं माना तथा उनका मानना था कि विश्व में विश्व में वर्ग विशेष नहीं बल्कि जाति विशेष का कल्चर है क्योंकि दुनिया भर में हर जगह दिखे तो जातियां ही रह रही है और उन जातियों में हमेशा से ही भेदभाव रहता है उनका मानना था कि जातियों के बीच का भेदभाव तक हमें खत्म करना होगा तथा कुछ जातीय संगठित होती है तो कुछ और संगठित और असंगठित जातियों को संगठित करना तथा इन जातियों के

6. लोहिया का सर्कल थ्योरी लोहिया का विचार था कि दुनिया एक सर्कल की तरह है जिसके अंदर हर एक देश की स्थिति अच्छी होती है तथा पुनः बेकार हो जाती है उनका मानना था. जो आज अच्छा देश है शायद वह कल पुनः नीचे हो जाए तथा जो आज नीचे है वह कल ऊपर हो जाए इसीलिए हमें अपनी परिस्थितियों को संभालना चाहिए ताकि यदि हम अच्छे हैं तो हमें चिंता करनी चाहिए कि हमें कल भी अच्छे बने रहना होगा लोहिया का यह विचार काफी चिंतन वाला था और इन विचारों को लेकर लोहिया काफी प्रसिद्ध थे इसीलिए लोहिया के विचारों को विश्व भर में काफी सम्मान से जाना जाता है.